12

lLÑfr dh /kjgj g & ckyxhr vkj ykfj ;k

nh{kk tk'kh*

नन्हें बच्चों को कहानी कविता जितनी रसमय लगती है उतनी ही उन्हें लोरियाँ और बालगीत भी सरस लगते हैं। परंतु आज जीवन की भागदौड़ में माता-पिता के कामकाजी होने के कारण ये लोरियाँ और बालगीत विलुप्त से होते जा रहे हैं। इन्हीं बालगीतों और लोरियों को शिक्षा से जोड़ते हुए कक्षाओं तक ले जाया जा सकता है इसके माध्यम से बच्चे न केवल सहज रूप से जानकारी ग्रहण करते है। बल्कि जानकारी ग्रहण करना उनके लिए रोचक भी बन जाता है। इसलिए ज़रूरी है कि इन विलुप्तप्राय: लोरियों एवं गीतों को संकलित किया जाए। इसी संदर्भ में हुए एक लघु शोध की रिपोर्ट यहाँ प्रस्तुत है।

माँ-बाबा के गीत-कहानी
मीठी यादें बचपन की,
रहे सदा मन के कोने में
चाहे हो जाऊँ पचपन की।

बचपन के वो प्यारे दिन, माँ का दुलार और पिता का प्यार, ऐसे खुशियों भरे दिन जो भुलाए न भूलें, मिटाए न मिटें। रोज़ शाम को कुमायूँ के अंचल में बिखरी कहानियाँ और गीत माँ सुनाती थी। वे कहानियाँ और गीत आज भी, मेरे अंतर्मन में कहीं-न-कहीं माला में मोतियों-सी पिरोई रखी हैं। सोते समय बाबूजी के सुनाए छोटे-छोटे गीत-

"आते-बाते दही चटाते, गोरी बछिया लुकती-छिपती" या "आहो चड़ि तेरे काटेंगे कान, तूने चुराए बल्ला के धान'

अथवा

''घुघूति-बासूति, माम काँ छू, मालकोटि" कैसे भूल सकती हूँ? सुंदर बचपन। एक मधुर एहसास लिए हुए, बचपन हर एक की यादों में होता है। । यदि बचपन दुलार भरा हो तो जीवन सदैव खुशहाल होता है। चेतनामय, आनंदभरा और सकारात्मक सोच से परिपूर्ण। इसी कारण मैंने अपने बच्चों को भी गीतों एवं कहानियों भरा बचपन देने का प्रयास किया।

परंतु आज के एकल परिवार, कामकाजी माता-पिता, व्यस्त जीवन के कारण बच्चों को लोरियाँ, गीत और कहानियाँ सुनाने का समय किसी के पास नहीं है। उन सबकी जगह ले ली है आधुनिक उपकरणों ने। बच्चे व्यस्त हैं कंप्यूटर, कॉमिक्स, वीडियोगेम एवं टी.वी.की दुनिया में।

इसी कारण अंत:करण से आवाज़ उठी कि क्यों न मैं उन भूली-बिसरी लोरियों एवं बालगीतों का संकलन करूँ जो हम सब की यादों में हैं। आवश्यकता है तो केवल उनके संकलन की।

* *प्रधानाध्यापिका*, रा.प्रा.वि. चोरगलिया, हल्दवानी, नैनीताल उत्तराखण्ड

इसी सोच के साथ मैंने चतुर्थ डिप्लोमा कोर्स ई.सी.सी.ई. की आपूर्ति हेतु अपने लघु शोध का विषय चुना- "हल्द्वानी विकास खंड में प्रचलित लोरियों एवं बालगीतों का संकलन एवं विश्लेषण।"

इस लघुशोध के उद्देश्य जो मैंने निर्धारित किए वे निम्नांकित हैं -

(i) हल्द्वानी विकास खंड के घरों में प्रचलित लोरियों एवं बालगीतों का संकलन

(2) संकलित लोरियों एवं बालगीतों की मूल स्वरों एवं धुनों में रिकार्डिंग।

(3) संकलित लोरियों एवं बालगीतों की लिंग के आधार पर वर्गीकरण।

(4) संकलित लोरियों एवं बालगीतों का भाषा/बोली के आधार पर वर्गीकरण।

शोध की परिकल्पनाएँ

(1) लोरियाँ एवं बालगीत शिशु के मूल्य विकास एवं संवेगात्मक विकास में सहायक होते हैं।

(2) लोरियाँ एवं बालगीत शिशु के भाषाई-विकास में सहायक होते हैं।

(3) लोरियाँ एवं बालगीतों का बच्चों के भावी जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(4) लोरियाँ एवं बालगीत समाज में फैली हैं, उनके संकलन की आवश्यकता है।

समय-सीमा को ध्यान रखते हुए मेरे द्वारा कुमायूँ-मंडल के नैनीताल ज़िले के हल्द्वानी विकास खंड का चयन कर यादृच्छिक रूप से छः ग्रामीण एवं चार नगरीय क्षेत्र लिए गए-

ग्रामीण क्षेत्र

- बमौरी
- बिठोरिया
- छोटी मुखानी
- जवाहर ज्योति
- फलेहपुर
- चोरगलिया

नगरीय क्षेत्र

- मल्ला गोरखपुर
- कलावती कॉलोनी
- आनंदपुरी
- नवाबी-रोड

तत्पश्चात् मेरे द्वारा संकलन कार्य प्रारंभ किया गया, जिसमें सर्वे द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन किया गया तथा साक्षात्कार प्रपत्र, वीडियो कैमरा इत्यादि उपकरण प्रयोग किए गए।

प्रदत्त संकलन से पूर्व शोधकर्त्ता द्वारा पाँच ग्रामीण लोगों पर उपकरण परीक्षण किया गया। तत्पश्चात् विशिष्ट मत संग्रह किया गया। संकलन के साथ-साथ ही रिकार्डिंग का कार्य भी किया गया। उस क्षेत्र की वृद्ध महिलाओं, माताओं, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों, शिक्षक वर्ग से साक्षात्कार के माध्यम से बालगीतों एवं लोरियों का संकलन किया गया।

रिकार्डिंग साथ-साथ करने से ये लाभ हुआ कि अपनी रिकार्डिंग कराने के उत्साह में लोगों ने अपने पास छिपे खजाने का मुँह खोल दिया और लोरियों एवं बालगीतों के रूप में मेरी झोली में उड़ेल दिया।

मेरे द्वारा घर-घर जाकर अकेले ही यह कार्य किया गया। दस पंद्रह घरों से खाली हाथ लौटती तो अगले कुछ घरों से एक साथ छः-सात बालगीत और लोरियाँ प्राप्त हो जाती

थीं। धीरे-धीरे मेरा उत्साह बढ़ा और विद्यालय कार्य के साथ-साथ अपना संकलन एवं रिकार्डिंग का कार्य पूर्ण किया। मेरा लक्ष्य सौ बालगीतों एवं लोरियों का संकलन करना था परंतु मैं एक सौ बारह (112) बालगीत एवं लोरियाँ संकलित कर सकी। समय और होता तो शायद और अधिक संकलन मैं कर पाती।

तत्पश्चात् प्रदत्तों की सांख्यकीय गणना की गई। जो लोरियाँ एवं बालगीत (हिंदी और अँग्रेज़ी के अतिरिक्त) पंजाबी, कुमाऊँनी, राजस्थानी, नेपाली आदि में प्राप्त हुए, उनके भाव और कठिन शब्दों के अर्थ भी मेरे द्वारा दिए गए। प्रत्येक गीत एवं लोरी को एक उपर्युक्त शीर्षक देने का प्रयास भी मैंने किया।

संकलित बालगीतों एवं लोरियों में से कुछ प्रस्तुत हैं-

एक सुंदर हिंदी बालगीत-

चिड़िया लाई चीनी चावल
चूहा लाया आटा,
हरी सब्जियाँ तोता लाया
धोकर उनको काटा,
मुर्गी पूरा मटका भरकर
दूध कहीं से लाई...,
आग जलाकर मीठी-मीठी
उसकी खीर बनाई,
पूरी बनी, बनी तरकारी,
सबने मिलकर खाया
कामचोर कौए का मन,
देख-देख ललचाया।

कुमाऊँनी का एक बालगीत -

उड़कुच्चि मुड़कुच्चि, दाम धरें कुच्चि
लैय्या लौंची, पीतल कैंची।
चोर की चोलिन कसि-कसि मैंछिन,
बृंदाबन में गेंद खेलनि
ओढ़-मोढ़, दैणि हात्ति
दैणि खुट्टि.....
निमोरि, नामोरि, लै.....

एक और उदाहरण प्रस्तुत है-

चूँ मुसि चूँ
ऊखल गाड़ा ग्यूँ,
ताल गाड़ा ग्यूँ पाका,
माल गाड़ा जौ पाका,
बीच मसूरी पाकी,
डाना को काफल पाको
नौल छै गो बेडु पाको,
गाड़ तिमुली पाकी,
चड़ि कणि ल्यो लागो
उड़ चड़ि उड़.....

पंजाबी का एक बालगीत -

अंब, अंब बिकाऊ
पैसे दे पज्ज..
धेले दे ढ़ाई
राजा दी बेटी
मोती चुणेंदियाँ,
फकीर खल्लड़ पाई।

इस प्रकार छोटे-बड़े कुल 56 (छप्पन) बालगीत संकलित किए गए इसके साथ ही 56 (छप्पन) लोरियाँ भी संकलित कर पाई जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

आजा री निंदिया आ जा री....
मुन्ने को सुला जा री।
सोने-चाँदी का है पलना
बिस्तर तकिया है मखमल की।
चार बहू आवे मुन्ने की,
दो सुलावे, दो खिलावे
ले साने की थाली....।

एक और लोरी

सो जा राजकुमारी सो जा
सो जा माँ की दुलारी सो जा,
सो जा नय उजियारी सो जा
सोजा.....सोजा.....सो जा...
सोजा, सोजा, सो जा...।
परियों के देश की रानी सो जा
चंदा तेरी बलिहारी सो जा
पवन चले मनहारी सो जा
सो जा.....।
फूलों की सेज बिछाई सो जा
पलकों में नींद समाई सो जा
निदियाँ करे अगुवाई सो जा
सो जा....सो जा....सो जा....।
सो जा, सो जा, सो जा।

संकलन के पश्चात् उसकी सांख्यिकीय गणना कर विविध विषयों से संबंधित लोरियों का उद्देश्यों के आधार पर विश्लेषण कर मैंने पाया कि लोग बालगीत एवं लोरियों के बच्चों पर पड़े प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव से परिचित हैं। वे जानते हैं कि बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने, मूल्य स्थापित करने, सकारात्मक सोच बनाने में इनका बड़ा योगदान है।

एक ओर जहाँ लोरियाँ बच्चों को सुरक्षा भावना, आनंद, स्नेह एवं सुख की अनुभूति कराती हैं वहीं दूसरी ओर बालगीत उनमें भाषा, गणित, नैतिक शिक्षा, पर्यावरणीय शिक्षा, संवेज्ञात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ संगीत एवं कला के प्रति रुचि उत्पन्न करने और समग्र विकास में अपना योगदान देते हैं।

वर्तमान में एकल परिवारों का होना, माताओं का कामकाजी होना और अभिभावकों की व्यस्तता के कारण ये बालगीत और लोरियाँ लुप्तप्राय होने लगी हैं और इनका स्थान आधुनिक उपकरणों ने (खेल एवं मनोरंजन के) ले लिया है। यद्यपि हल्द्वानी खंड में विविध भाषा/बोली वाले लोग रहते हैं तथापि हिंदी एवं कुमाऊँनी लोगों की अधिकता है, इसी कारण हिंदी एवं कुमाऊँनी भाषा में अधिक संकलन संभव हो सका।

लोग लोरियों की अपेक्षा बालगीत सुनाने में अधिक रुचि लेते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में बालगीतों का बहुत महत्त्व है क्योंकि इनके माध्यम से बच्चे सहज रूप में विविध जानकारियाँ ग्रहण कर लेते हैं।

बालकों की अपेक्षा बालिकाओं के लिए लोरियाँ बहुत ही कम हैं, इसके लिए मेरा सुझाव है कि बालिकाओं को लोरी सुनाते समय लोरियों में संबोधन बदल दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त बालिकाओं के लिए नई लोरियाँ बनाई जा सकती हैं जिससे आने वाले समय में समाज में ये प्रचलित हो सकें।

भावी शोध के संदर्भ में मेरे निम्न सुझाव हैं कि संकलन हेतु वृद्ध पुरुषों, महिलाओं, माताओं, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों, शिक्षक वर्ग के अतिरिक्त

आई.सी.डी.एस. के कर्मचारियों एवं अधिकारियों, साहित्यकारों, समाज सेवियों से भी संकलन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यदि राज्य के प्रत्येक जनपद से आँकड़े संकलित किए जाएँ तो संकलन और सुदृढ़ होगा।

निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि भविष्य में भी बालगीतों एवं लोरियों का संकलन कर उनका निरंतर विकास किया जाए। पाठ्यक्रम में भी इन्हें सम्मिलित किया जाए, साथ ही साथ विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी इनका प्रचार किया जाए। जिससे इनका संकलन निरंतर समृद्ध हो। इनके द्वारा हमारी संस्कृति एवं परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हों और प्रत्येक शिशु को इनका लाभ मिल सके। प्रत्येक बच्चे का भावी जीवन खुशहाल हो इसी कामना के साथ..।

माँ की ममताई लोरियाँ
बाबू जी की कहानी
मन के नन्हें कोने में,
छिपी उन्हीं की ज़ुबानी।

❑❑❑